कड़वाहट के दौर में वाघा बॉर्डर से आई सात लाख टन चीनी

पाकिस्तानी चीनी आने से देश के उद्यमी खफा

राज्य मुख्यालय | सन्तोष वाल्मीकि

सरहद पर फौजी तनातनी के चलते भारत पाकिस्तान के रिश्तों में घुली कड़वाहट दूर करने की कोशिशें जारी हैं। इन्हीं में से एक दोनों मुल्कों के बीच व्यापार को बढ़ावा दिए जाने के तहत पाकिस्तान से करीब बारह लाख मीट्रिक टन चीनी का आयात भी शामिल है। अब तक सात लाख टन चीनी वाघा बार्डर के रास्ते भारत आ भी चुकी है मगर यह पाकिस्तानी चीनी अपने मुल्क के घरेलू चीनी उद्योग को रास नहीं आ रही। खासतौर पर उत्तर भारत में सबसे ज्यादा चीनी का उत्पादन करने वाले उप्र के मिल मालिकों को।

हरियाणा, पंजाब और जम्मू कश्मीर जैसे जरूरतमंद राज्यों को ज्यादातर उ.प्र. से ही चीनी की आपूर्ति होती है। प्रदेश की मिलों के पास पिछले साल का ही अच्छा खासा स्टाक पड़ा हुआ है और

मुश्किल

- पाक से आई सस्ती चीनी के चलते पंजाब, हरियाणा व जम्मू कश्मीर को यूपी की मिलों से चीनी की आपूर्ति घटी

इस साल भी चीनी का बम्पर उत्पादन होना है। ऐसे में पाकिस्तान से वाघा बार्डर के रास्ते आ रही चीनी तीन रूपए प्रति कुन्तल के भाड़े और दस फीसदी आयात शुल्क के साथ करीब 27-28 रूपए किलो की पड़ती है जबकि यूपी की चीनी की उत्पादन लागत ही 32 रूपए किलो की आ रही है। ऐसे में पाकिस्तान की यह सस्ती चीनी पंजाब, हरियाणा व जम्मू कश्मीर के बाजार में पहुंचने पर यूपी की चीनी को रोक रही है।

चूंकि मिल मालिकों को गोदामों में चीनी का स्टाक संजोने का खर्च भी उठाना पड़ता है और लेवी चीनी की उठान समय से न होने से भी उन्हें नुकसान होता है, इस नाते अन्य राज्यों से चीनी की मांग घट जाने के चलते यूपी के मिल मालिकों को काफी दिक्कतें पेश आती हैं।

यूपी शुगर मिल्स एसोसिएशन के प्रतिनिधियों द्वारा पिछले दिनों इस तरफ ध्यान आकृष्ट करवाने पर मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भी केन्द्र से बात करने की हामी भरी है। एसो. के प्रतिनिधियों ने प्रदेश सरकार को सलाह दी है कि वह केन्द्र से बात कर चीनी का आयात शुल्क दस फीसदी के बजाय पहले की तरह साठ फीसदी करने के लिए दबाव बढ़ाए।

एसो. प्रतिनिधियों के अनुसार इस बार राज्य की निजी चीनी मिलों को औसतन एक किलो चीनी बनाने पर चार रूपए का नुकसान उठाना पड़ रहा है। इस साल करीब मिलों को 3200 करोड़ का नुकसान होने का अंदेशा है। यही वजह है कि गन्ना किसानों को देय भुगतान की देनदारी भी बढ़ती जा रही है।